प्रथम अध्याय

प्रस्तावना

प्रथम अध्याय

1. प्रस्तावना

1:1 पूर्व भूमिका

प्रस्तुत अध्याय मे मतंगमुनि के सिद्धांत के अनुसार, ध्वनि का उद्भव सारंगदेव द्वारा मानव देह मे प्रतिध्वनि के रूप में होता है। जो आत्मा अभिव्यक्त कर मन को उत्तेजित करती है। जो मानव देह के मध्य मे विराजमान अग्नि पर प्रहार करती है। यह अग्नि वायु को उत्तेजित करती है। जो ब्रह्मग्रंथि में से होते हुए ऊर्ध्व गति कर के नाभि के आसपास, वक्ष स्थल, कंठ, तालव्य में ध्वनि को प्रकट करती है। यह ध्वनि का अन्य नाम 'नाद' है, क्योंकि वह वायु (ना) और अग्नि (द) के संमिश्रण से उद्भव होती है।[1]

ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति एक प्रचंड विस्फोट से हुई है यह सर्व विदित है एवं विज्ञान इस बात से सहमत भी है। किसी भी विस्फोट के निमित्ताधीन दो वस्तुओ या तत्वो का होना अति आवश्यक है। यह दो वस्तुओ या तत्वो के टकराव से प्रकाश, ऊर्जा या नाद की उत्पत्ति होती है। आघात, स्पर्श या संघर्ष से यानी दो वस्तुओ की रगड़ या टकराने से जो ध्वनि/नाद निकलता है, उसे "आहत नाद" (स्थूल नाद) कहते है। किन्तु यह दो वस्तुओ का अस्तित्व ही न हो और दो वस्तु या तत्वो के आघात की संभावना ही न हो फिरभी उत्पन्न हो वह स्वयं स्फूरित नाद है "अनाहत नाद"(सूक्ष्म नाद)। जितना अनाहत नाद गूढ और रहस्यमय है उतना ही भारतीय आध्यात्म एवं संगीत गूढ और रहस्यमय है। भारतीय संगीत की यह दौड़ आहत नाद को साधते हुए अनाहत नाद मे विलीन होना है। यानी जीव की शिव की और गति है। ब्रह्माण्ड की प्रत्येक चराचर वस्तुओ में नाद व्याप्त है। अतएव इस नाद को भारतीय आध्यात्म एवं संगीत में ब्रह्म स्वरूप माना गया है।

ॐ नादब्रह्मणे नमः।

चार्ल्स डार्विन के सिद्धान्त मे निरूपित मानवीय उतक्रान्ति मात्र होमो सेपियन्स सेपियन्स से लेकर प्रवर्तमान मानवीय रूप केवल शारीरिक या मानसिक रूप के विकास तक सीमित नही है। अपितु यह विकास मानव से महामानव तक के कालानुसार होते नव निर्माण का सफरनामा है। जिसमे अनेक युगो मे अनेक आयामो का विकास होता रहा है। मानव हर एक युग में अपने अस्तित्व को बरकरार रखने के उद्देश्य से उत्तपन्न होती आवश्यकताओ को पूरा करने में शारीरिक या मानसिक रूप से विकासशील रहा है। इसलिए मानव उनके ही साथ उत्पन्न हुई अनेक प्रजाति से अनेक आयामो मे ज्यादा विकास करके उन्नमुख होता गया। मानवीय आवश्यकताओने कालानुसार सभ्यता एवं संस्कृति को जन्म दिया

1.द इंडियन थीओसोफिस्ट/ओफिसियल जरनल ऑफ द इंडियन सेक्शन, द थियोसोफ़िकल सोसायटी/ अक्टूबर-नवम्बर 1985/ क्रमांक 10-11/ पृष्ठ-43

है। सभ्यता और संस्कृति एक सिक्के की दो बाजू की तरह रही है। संस्कृति को UNESCO कुछ इस तरह निरूपित करता है।[1]

"culture should be regarded as the set of distinctive, spiritual, material, intellectual and emotional features of society or a social group, and that it encompasses, in addition to art and literature, lifestyles, ways of living together, value systems, traditions and beliefs."

मानवीय अभिगम अन्य प्रजातिओ के सापेक्ष बहुआयामी विकसित हुआ, जिससे उनकी भावनात्मक अभिव्यक्ति अन्य तमाम प्रजातिओ से अधिकत्तम उन्नत होती रही। मानव अन्य प्रजातिओ की भाँति केवल उत्पत्ति, संरक्षण और निर्वहन जैसी अस्तित्व की प्रक्रिया का हिस्सा न रहकर शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक क्षेत्रो में उन्नति करता रहा। जिसने मूलतः आवश्यकताओ के लिए पाषाण युगीन मानव के इशारो या आवाजों के माध्यम से लेकर भावनात्मक स्तर की पारस्परिक अभिव्यक्ति को भी विस्तृत मार्ग दिया। जिसमे कला एक अभिव्यक्ति का सर्वश्रेष्ठ माध्यम रहा है।

1:2 कला

भारतीय साहित्य मे 64 कलाओ का विधान है। जो मानवीय सभ्यता एवं संस्कृति पर आधारभूत रही है। यह कलाए मानव को बहुआयामी स्तर पर विकसित करती रही है। "कला" तत्व को व्याख्यायित करना बड़ा मुश्किल है, क्योंकि यह अपने आप में अनेक पहलुओ को समेटे हुए है। कला एक कलाकार के अन्तर्मन की अभिव्यक्ति है, छबि है। जो व्यक्तिगत रूप से भिन्न भिन्न रही है। वह एक एसा कौशल्य है, जिससे कलाकार अपनी क्षमता के अनुसार कुछ नया अपने आप के अन्तर्मन का भाव सौंदर्यात्मक रूप से प्रदर्शित कर सके।

लैंगर ने अपने ग्रंथ 'फिलिंग एण्ड फॉर्म' के 1953 ई० के संस्करण के बारहवे पृष्ठ पर एक प्रश्न उठाया है कि सौन्दर्य-शास्त्र का संबंध कलाकार की अभिव्यक्ति (एक्स्प्रेशन) से माना जाय अथवा उसके उत्पन्न होने वाले प्रभाव (इम्प्रेशन) से? कलाकार की द्रष्टि से किसी कलाकृति का रचना-पक्ष अभिव्यक्ति है और पाठक या सहृदय मनुष्य की द्रष्टि से कला का अध्ययन प्रभाव का अध्ययन है। इनमे उन्होने प्रभाववाले पक्ष को महत्व दिया है और प्रभाव-पक्ष के विवेचन-विश्लेषण को ही सौंदर्य-शास्त्र का प्रधान विषय माना है, न कि क्रोचे की तरह अभिव्यक्ति के विवेचन को [2] कला एक तरह से ऊर्जा है। उसका

---

1. राजेंद्र ,अपर्णा/म्यूजिक लाइब्रेरी इन इंडिया/थीसीस/यूनिवर्सिटी ऑफ पूणे/2007/ पृष्ठ-2

2. वसंत/ संपादक- लक्ष्मीनारायण गर्ग/ संगीत विशारद/पृष्ठ 29

रूप ईश्वर की भाँति निराकार है। जैसे ईश्वर प्रत्येक कण कण में भिन्न भिन्न रूप से विराजमान है, वैसे ही कला तत्व तमाम जीवो में भिन्न भिन्न रूप से स्वतः विराजमान है। केवल प्रश्न है अभिव्यक्त करने का। यानी कि यही अभिव्यक्ति प्रत्येक कलाकार द्वारा अपने अपने कौशल्य, अनुभव एवं भावनाओ का रूप है। चाहे वह शास्त्र वर्णित 64 कलाओ में से कोई भी कला हो।

यह अभिव्यक्ति कला के रूप में परंपरागत रूप से निर्वाहित होती है, जिसमे मानवीय सभ्यता, भौगोलिक आबोहवा, समाज, रीत-रीवाज़, रहन-सहन, खान-पान से लेकर मनुष्य मन से जुड़े श्रृंगार, हास्य, शांत, करुण, रौद्र, वीर, अद्‌भूत, वीभत्स, भयानक जैसे नव रसो का प्रतिबिंब दिखाई देता है।

शोधकर्ता का स्पष्ट रूप से मानना है कि कला को कैद करना ना मुमकिन है। वह ऊर्जा के समान प्रवाहित हो सकती है। अपना रूप बदल सकती है। कला न क्षीण हो सकती है, न उत्पन्न हो सकती है। वह विभिन्न काल मे विभिन्न रूप से प्रकट होती रहती है। वह जो काल के आधीन है और काल को पकड़कर रखना जैसे ना मुमकिन है, वैसे ही कला को पकड़कर रखना ना मुमकिन है। यह लाक्षणिकता उस सर्वशक्तिमान परमतत्व, जो सकल सृष्टि का संचालन, निर्वहन और विनाश की प्रक्रिया से जुड़ा है उनकी भाँति प्रतीत होती है। इसलिए यह कला ईश्वरीय तत्व से आयुक्त है।

यह कलाओ में निहित स्थूल नाद एवं रचना-पक्ष की अभिव्यक्ति तथा व्यक्तिगत प्रभाव-पक्ष को संगृहीत करने का विचार और व्यवस्थापन से कलातत्व को संगृहीत और संवर्धित करने की प्रक्रिया का अभ्यास यानि कि ध्वनिलेखागार के अध्ययन्न के प्रति शोधकर्ता के आकर्षण का कारण रहा है।

1:3 प्रवर्तमान समय में प्रस्तुत संशोधन की आवश्यकता

प्रस्तुत शोधकार्य **“ध्वनिलेखागार–परंपराओ का ख़जाना उत्तर भारतीय शास्त्रीय गायन के परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन”** प्रवर्तमान समय में देश के ध्वनिलेखागारो में संगृहीत उत्तर भारतीय शास्त्रीय गायन की प्रवर्तमान स्थिती को दर्शाता है।

1. पाश्चात्य संगीत से प्रभावित होते भारतीय युवा हिन्दुस्तानी संगीत के उत्तर भारतीय शास्त्रीय गायन की विधा के गरीमापूर्ण इतिहास से परिचित हो वह इस संशोधन की प्रमुख आवश्यकता है।
2. शास्त्रीय संगीत क्षेत्र से जुड़े साधको, विद्यार्थीओ, कलाकारो, विचारको, विवेचको तथा समग्र विश्व के भारतीय शास्त्रीय संगीत के चाहको को भारत के ध्वनिलेखागार से जोड़ने मे सहायक हो सकता है।
3. यह शोधकार्य उत्तर भारतीय शास्त्रीय गायन की परंपराओ का संवर्धन करने में तथा अभ्यास में सहायक हो सकता है।

4. उत्तर भारतीय शास्त्रीय गायन से जुड़े लगभग सभी घरानो यानि की गुरू-शिष्य परंपरा का तलस्पर्शी अभ्यास एक ही स्थान पर हो सकता है। जिससे अध्ययन-अध्यापन प्रणाली के नए आयामो पर विचार हो सकता है।
5. एक गायक या गायिका की पूरी सांगीतिक यात्रा के दौरान उनके विकास के स्तर का सूक्ष्म अवलोकन हो सकता है।
6. उत्तर भारतीय शास्त्रीय गायन के घरानों का तलस्पर्शी अभ्यास एवं किसी घराने के कालानुसार होते परीवर्तन के तुलनात्मक अभ्यास में यह संशोधन कार्य सहायक हो सकता है।
7. ध्वनिमुद्रण के उद्भव, विकास गाथा यानी कि इतिहास की जानकारी मिल सकती है। ध्वनिमुद्रण का भारत में प्रादुर्भाव एवं भारतीय शास्त्रीय गायन का ध्वानिमुद्रण के इतिहास की जानकारी पाने में सहायक हो सकता है।
8. उत्तर भारतीय शास्त्रीय गायन के ध्वनिमुद्रणों को संगृहीत करके परंपराओ को सँजोये रखनेवाले रसिक, गुनिजन तथा तजज्ञों के विषय में जानकारी प्राप्त हो सकती है।
9. व्यक्तिगत ध्वनिलेखागार एवं सार्वजनिक ध्वनिलेखागार की मर्यादाओ से अवगत होना एवं उसके समाधान रूप विचार विमर्श तथा विकासलक्षी कार्य हो सकता है।
10. ध्वनिलेखागार में निहित उत्तर भारतीय शास्त्रीय गायन को 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' सामान्य जनता के उपयोग के संबंध में किए जानेवाले भविष्यलक्षी योजनाओ से अवगत होना है।
11. संस्कृति के संवर्धन हेतु किए जाने वाले नवतर प्रयोग में सहायक हो सकता है।

1:4 पूर्वधारणा

उत्तर भारतीय शास्त्रीय गायन के अध्ययन-अध्यापन में प्राचीन समय की वैदिक पद्धति यानि कि गुरुशिष्य परंपरा का स्थान प्रवर्तमान समय में पाश्चात्य शैक्षणिक अध्ययन-अध्यापन प्रणाली ने लिया है तथा जिस प्रकार से प्रवर्तमान समय में वैज्ञानिक तकनीकी का प्रयोग बढ़ा है, उसमे ध्वनिलेखागार का अस्तित्व होना या उनका अभ्यास उपयुक्त नही है। यह पूर्वधारणा को ध्यान मे रखकर तथ्यो को उजागर करने हेतु यह संशोधन कार्य किया गया है। यहा 'ध्वनिलेखागार'' का मतलब ध्वनिमुद्रण का संग्रह, संवर्धन, वर्गीकरण एवं श्रोता-रसिक के लिए व्यवस्थापन।

1:5 संशोधन का व्याप और मर्यादाए

1. यह संशोधन कार्य भारत के ध्वनिलेखागार मे संगृहीत केवल उत्तर भारतीय शास्त्रीय गायन के ध्वनिमुद्रणों के अभ्यास तक सीमित है।

2. अन्य सांगीतिक विधाओ की ध्वनिलेखागार में प्रवर्तमान स्थिती से यह संशोधन कार्य संबन्धित नहीं है।
3. यह संशोधन के लिए किए गए अभ्यास में पुस्तकों में निहित उत्तर भारतीय शास्त्रीय गायन विषयक साहित्य को सम्मिलित नहीं किया गया है।
4. यह शोधकार्य के लिए संपर्क किए गए ध्वनिलेखागार, संग्रहकार, कलाकार, प्रतिक्रिया से संबन्धित है।

1:6 प्रस्तुत संशोधन के उद्देश्य

भारतीय शास्त्रीय संगीत आदिकाल से अविरत रूप से चला आ रहा है। उस पर सर्वे भारतीय कलाए गुरुमुखी रही है, और यह अद्‌भूत परंपराओ का निर्वाह एक पीढ़ी से आगामी पीढ़ी तक अविरत रूप से प्रवाहित होता रहा है। जिसमे अनेक गुरुजनों, वाग्येकारो, कलाकारो, गुनिजनों तथा विवेचको का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान रहा है। अनेकविध राग, रचनाए एवं सौंदर्यात्मकता को देखनेका और अनुभूति करने का अभिगम व्यक्तिगत रूप से भिन्न भिन्न रहा है। इसीलिए, यह परंपरागत कलाए ज्यादा से जायादा नए आयामो तथा विभिन्न द्रष्टिकोण प्राप्त करती रही है।

यह तमाम कलाए आगामी पीढ़ी में संगृहीत और संवर्धित होती रहे इसीलिए अनेक ज्ञाताओ ने अनेक प्रयत्न किए है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत के गायन विषय में पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर जी और पंडित विष्णुनारायण भातखण्डे जी द्वारा परंपरागत बंदिशों को संगृहीत करने तथा अनेक वाग्येकार-कलाकारो की सांगीतिक सोच को आगामी पीढ़ी तक पहुंचाने के लिए स्वरलिपी की रचना की है। जिस से अनेक बंदिश और रचनाए आजतक जीवंत रही है, परंतु ध्वनिमुद्रण की प्रौध्योगिकी के विकास के बाद अत्यंत सचोट रूप से विचारो का दस्तावेजीकरण और अन्य तक स्पष्ट रूप से पहुँचाना संभव हुआ है। ध्वनिमुद्रण के यह अभिलेखागार अभ्यासु के लिए पथ प्रदर्शक और उनकी परंपराओ के निर्वाह के लिए आशीर्वाद रूप है।

गुरूपरंपरा से अनेक वर्षो की कठिन साधना के बाद प्राप्य ज्ञान आगामी पीढ़ी को वारसागत ना दे सके और उनकी साधनाओ की पराकाष्ठा, विचार एवं कला परत्वे अभिगम नवोदित कलाकारो, वाग्येकारो को ना दे सके तो संस्कृति पूर्ण रूप से खिल नहीं सकती। एसे अभिलेखागार अनेक गुरुओ के ज्ञान को उनके ही स्वमुख से प्रस्तुतीकरण करा सकता है। ध्वनिलेखागार के माध्यम से तमाम गुरुओ और उनकी परंपराए जीवंत रहती है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय गायन के विद्यार्थीओ का यह ध्वनिलेखागार के अभ्यास के प्रति रूचि पैदा हो, कला और संस्कृति के संरक्षण तथा संवर्धन हेतु नयी पीढ़ी तैयार हो यह उद्देश्य के साथ यह संशोधन प्रवर्तमान समय की मांग है।

1:7 संशोधन क्रियाविधि

यह संशोधन करने के लिए संबन्धित माहिती उपलब्ध करनी और उस पर से निर्धारित पूर्वधारणा का अभ्यास करना आवशयक है। जिसके अनेक तरीके है। यह तकनीक को संशोधन क्रियाविधी (Research Methodology) कहते है।

प्रस्तुत संशोधन कार्य के लिए वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधी (Descriptive Research Method) पसंद की गई है। इनका प्रमुख मुद्दा वर्तमान घटनाक्रमों का अध्ययन करना है। अर्थात वर्तमान घटनाक्रमों के विभिन्न पक्षों का विवरण देना इस प्रकार के शोधो को पूरा करना निहित उद्देश्य है। उपलब्ध परिस्थितियों या दशाओ की प्रकृति का पता लगाना या वर्तमान परिस्थितियों का तुलनात्मक अध्ययन की द्रष्टि से मानांकों को निश्चित करना या विशेष प्रकार की घटनाओ गोचरो के मध्य पाये जाने वाले संबंधो को निर्धारीत करना इस विधि के क्षेत्र मे आता है।

जॉन डबल्यू बेस्ट के अनुसार "वर्णात्मक अनुसंधान 'क्या है ?'का वर्णन एवं विश्लेषण करता है। परिस्थितियाँ अथवा संबंध जो वास्तव में वर्तमान है, अभ्यास जो चालू है, विश्वास विचारधारा अथवा अभिवृत्तियाँ जो पायी जा रही है, प्रक्रियायें जो चल रही है, अनुभव जो प्राप्त किए जा रहे हैं अथवा नयी दिशाए जो विकसित हो रही है, उन्ही से इसका मतलब है।"[1]

वर्णनात्मक अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य वर्तमान स्थिति का स्पष्टीकरण करना तथा भावी नियोजन एवं संबन्धित परिवर्तन में सहायता करना। वरणात्मक अनुसंधान में वर्णनात्मक पक्ष, तुलनात्मक अथवा मूल्यांकन पक्ष और निष्कर्ष एसे तीन विभाग है। विभिन्न लेखको ने वर्णनात्मक अनुसंधान को कई प्रकार से वर्गीकृत करना का प्रयास किया है, जिसमें वान डैलेन द्वारा दिया गया वर्गीकरण अधिक मान्य है उनके अनुसार वर्णनात्मक अनुसंधान को निम्नलिखित ३ मुख्य भागों में बाँटा गया है।

- **सर्वेक्षण अध्ययन–** सर्वेक्षण (Survey) की उत्पत्ति शब्दों 'Sur' या 'Sor' तथा 'Veeir' या 'Veior' से हुई है, जिसका अर्थ क्रमशः ऊपर से नीचे की और देखना होता है। सामान्यतः सर्वेक्षण वर्तमान में क्या रूप है ? इससे संबन्धित है। वर्तमान में क्या स्वरूप है? इसकी व्याख्या एवं विवेचना करता है, इसका संबंध परिस्थितियाँ या संबंध जो वास्तव में वर्तमान है, कार्य जो हो रहा है, प्रक्रिया जो चल रही है, उन से होता है।

1. https://www.samajkaryshiksha.com/2021/06/descriptive-research-method.html

- **अंतर संबंधो का अध्ययन–** इसमे अनुसंधान कर्ता / शोधकर्ता केवल वर्तमान स्थिति का सर्वेक्षण ही नहीं करता है, बल्कि उन तत्वों को ढूँढने का प्रयास भी करता है, जो घटनाओं के संबंध के विषय में सूझ प्रदान कर सके।
- **विकासात्मक अध्ययन –** विकासात्मक अध्ययन केवल वर्तमान स्थिति एवं पारस्परिक संबंध को ही स्पष्ट नहीं करता है, बल्कि यह भी स्पष्ट करता है कि समय व्यतीत होने के साथ इनमें क्या परिवर्तन आए हैं? इसके अंतर्गत अनुसंधान कर्ता महीनों एवं वर्षो तक चरो के विकास का अध्ययन करता है। यह संशोधन संबन्धित तथ्यो को उजागर करने हेतु निम्न लिखित इकाइओका सर्वेक्षण के लिए प्रयोग किया गया है।
    - भारत के सुप्रसिद्ध ध्वनिलेखागार
    - लेखपाल
    - उत्तर भारतीय शास्त्रीय गायन क्षेत्र के कलाकार
    - विश्वविध्यालय के संगीत विभाग
    - संगीत शिक्षण प्रदान करती संस्था

ध्वनिलेखागार की मुलाक़ात, कलाकारो और लेखपालों से साक्षात्कार तकनीक का प्रयोग एवं विद्यार्थीओ के लिए तैयार की गई प्रश्नावली के उत्तर से तथ्यो की माहिती एकत्रित कि गई है।

*****